સાધન દીપિકા

ડો. જયેન્દ્ર સોની

સાધન દીપિકા

(*"સાધન દીપિકા"* was one of Dr. Jayendrabhai Soni's message segments which was delivered on mediums like Whatsapp groups and his Facebook account. Here is a collated document of all the messages related to this segment.)

मित्रो, जयश्रीकृष्ण.

आज महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी के ज्येष्ठ पुत्र प्रभुचरण श्रीगोपीनाथजीका प्राकट्योत्सव। आप सभी को इस मंगलदिन की बहोत बहोत बधाई। आपश्रीकी विशेष स्मृति इसलिए की - श्रीमदाचार्यचरणने भागवतजी के संक्षिप्त विवरण रुप 'श्रीपुरुषोत्तम सहस्त्र नाम स्तोत्र' ग्रंथकी रचना ईनके हि निमित्त की थी। पुष्टि संप्रदाय का यथार्थ अनुसरण करनेके लिए मार्गदर्शक रुप महत्वपूर्ण ग्रंथ "साधन दिपिका" की रचना आपश्रीने हि की है, जो वर्तमानकालमें हमारे लिए दिवादांडी रुप है।

हम पिछले दो वर्षोसे श्रीहरिरायचरण की 'श्रीहरिराय वांग्मुक्तावली' अंतर्गत अनेक लघुग्रंथ पर आधारित "श्रीहरिराय मुक्तक" से हमारी सुबह की शुरुआत करतें है, जो अब अंतिम चरण में है।

आजसे हम "साधनदीपिका" ग्रंथ के उपदेश से हमारे मंगलदिन का प्रारंभ करेंगे।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"साधन दीपिका" (१)

****

"वे सुप्रसिद्ध श्रीमत् तातपाद श्रीमद् वल्लभाचार्यजी की चरणकमलकी रेणु-परागकण हमारे लिये कामधेनु समान हों। अर्थात् समग्र कार्योको, कामनाओ को पूर्ण करनेवाली हो। जैसे अन्योके लिए अर्थात् भक्तिमार्गेतर लोगों के लिये स्वर्गके वृक्ष - कल्पतरु होते हैं।" (१)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"साधन दीपिका" (२)

****

"श्रुति और स्मृतियोंकी - तद्रुपा व्रजसीमन्तिनीयोकी चूडामणियो द्‌वारा नीराजनीकृत आरती उतारी गई हे, जिनके चरणारविन्दोकी , तथा जो माता यशोदा की गोदमें लालित किये जा रहे हैं, उन श्रीनन्दनंदनको मैं प्रणाम करताना हुं" (२)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"साधन दीपिका" (३)

****

"भक्तिमार्गके वितान - प्रस्तार के लिये जो हुताशन - 'हरिवदनवैश्वानर विभु' श्रीप्रभुके मुखारविंद में स्थित अग्नि स्वरुप से जो अवतरित हुए हैं, एसे श्रीमदाचार्यजी श्रीमहाप्रभुजी ही हमारे परम प्रमाण है। ईसके अतिरिक्त अन्य सभी को हम प्रमान्तरके रुप में मानते हैं।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (४)

****

"वेदत्रयी - ऋग्, यजु:, साम - तीनो वेद, उनके शिरो भाग - ब्रह्म प्रतिपादक उपनिषदत् रुप वेदांत, उनके सूत्र - उत्तरमीमांसा स्वरुप ब्रह्मसूत्र, उनका व्याख्यान, भाष्य स्वरुप श्रीमद् भागवत तथा उसमें संमत जो साधन उसके निरुपण के लिए भक्तिशास्त्र के अनुसार 'साधन दीपिका' नामक ग्रंथ की रचना कर रहा हुं" (४)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (५)

****

"आत्मा वा' रे ईस श्रुति वचनसे श्रीभागवतका ही दर्शन है, जिसका फल एसा विधान प्रतिपादित होता है, जो श्रवणाणादि के द्वारा प्रतिज्ञात होता है। अत एव उस फल को प्राप्त करनेके लिए उस भगवत् स्वरुप का सेवन करें, रटन करें, या उस रसात्मक स्वरुपका आस्वाद लें" (५)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (६)

****

"तस्मात् - उस कारणसे - जैसाकी तुमने पूछा है - 'सर्वात्मना - म्रीयमाणस्य किं कार्यम्', उस प्रश्न के कारण से - हे भारत ! भरत वंशोद्भव परीक्षित ! अभय - कल्याण या मुक्ति चाहनेवाले मनुष्य को सर्वात्मा, भगवान, हरि, ईश्वर को श्रवण करना चाहिये, उसका कीर्तन तथा स्मरण करना चाहिए, यह श्लोकार्थ है। (६)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (७)

****

'पुरुषस्य इति' - संसारको छोडनेवाले लोगोके लिये, एसे पुरुष के लिये श्रीहरि के आराधन में मुक्ति जिस प्रकार विशेष रुपसे मिलती है, उस पत्रकार का हम निरुपण करतें हैं। (७)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"सावन दीपिका" (८)

****

भक्तिके सामान्य स्वरुप को समझाने के बाद अब भक्तिं के विशेष रुपका संक्षेपमें प्रतिपादन करनेके उद्देश्य से श्रीमत् प्रभुचरण निबंधोक्त पांचरात्र के श्लोक को ही उसके अर्थ -गांभिर्यके कारण उद्धृत करतें है। (८)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (९)

****

महात्म्य - परमात्मभाव व सर्वात्मभाव को समझाने के लिए, अर्थात् भगवद् भावका बोध कराने के लिए - भगवद्

गुणकर्मोका बोध करानेके लिए श्रवण - श्रोतेन्द्रियजन्य शब्दज्ञान हेतु वेदादि शास्त्रोका उपयोग है, जिसको समझने के लिए गुरु की आवश्यकता होती है। (९)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१०)

****

'कृष्णसेवा परं' से तात्पर्य 'परब्रह्ममें तत्स्वरुपावबोधमें निष्णात हो, स्वरुप सेवा में तत्पर हो अर्थात अपरोक्षानुभवमें समर्थ हो, ऐसी परीक्षा करके गुरु बनाये, जो दम्भादिरहित हो, और भागवत का तत्त्वज्ञ हो । शिष्य भी ज्ञान पाने की ईच्छा रखनेवाला होना आवश्यक है, कर्मों की वह ही आत्मसमर्पण के मार्गका अधिकारी होता है (१०)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (११)

****

मनुष्य अपनी देह रुपी नौका से जो भवसागर को पार करना चाहता हैं, उसे ऐसे कर्णधारकी आवश्यकता होती है, जो निर्देश, संचालन विज्ञ हो और अनुभवी हो। अत: कहा गया है की ऐसी ईच्छा रखनेवाले को कप्तान की योग्यता वाले गुरुके द्वारा उपदेशोके मार्गदर्शन द्वारा भवसागर पार करना चाहिए (११)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१२)

****

जो ब्रह्माको - सृष्टिनिर्माणकर्ताको बनाता है, तथा जो पूर्वमें सर्ग के आदिमें वेदो को ध्वनि तरंगात्मक रुप से उसके पास भेजता है, निश्चय ही उस देवको जो आत्मा में अवस्थित बुद्धि को प्रकाशित करता है, उसके शरणमें मैं मुमुक्षु होकर प्रपन्न रुपसे जाता हुं (१२)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१३)

****

सर्वधर्मान् परित्यज्येति _ आदेशलक्षण सब धर्मोको छोड़ कर, लौकिक - अलौकिक सब धर्मोको (कर्तव्योंको) छोड़कर - धर्मत्याग पूर्वक एकमात्र मुख्य श्रीपुरुषोत्तम रुप में जानकर मेरी शरणको प्राप्त कर। ईस प्रकार शरणके स्वरुपको तथा पूर्वोक्त श्रुति एवम् स्मृतिमें समझाया है। (१३)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१४)

****

पूर्वोक्त प्रकारसे श्रुति एवम् स्मृति के वचनों द्वारा प्रेम का हि उपदेश श्रुतिपथगामी होने के कारण प्रपत्तिमें कारण प्रेम ही है, यह दृढ निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है। अत: इन पुरुषोतम की सेवा में मूल का अभिषेक ही करना चाहिए। भक्तिरुपी वृक्ष के मूलको स्नेह द्वारा सिंचित करना चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१५)

****

देह धारण करनेवाला जीवात्मा सम्पुर्ण रुप से कर्मका त्याग कर हि नहीं सकता । यह यहां निश्चयार्थक है। 'देहं बिभर्तीति देहभृत्' । देह जब तक है - सप्राण है, तब तक काल, कर्म और स्वभावके अधीन होता है। अत: जब तक उसका आरंभक - प्रारब्ध शेष रहता है तब तक संपुर्ण श्रोतकर्मोको, वर्णाश्रमानुरोध के अनुसार करनेही चाहिए।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१६)

****

पंद्रहवें श्लोकमें जो स्वधर्माचरण कहा है, उसे ही और स्पष्ट समझाने के लिए उसे और विश्लेषित करतें हैं - 'स्वधर्माचरणं शक्त्या' इति । यथा सामर्थ्य यथा संभव स्वधर्मका (श्रोत धर्मका) पालन करना चाहिए ही - निश्चय रुपसे ।अधर्म वा परधर्म से अपने आपको निवृत्त रखना चाहिए - दूर रखना चाहिए। एवं इन्द्रिय रुपी अश्वोका निग्रहण करना चाहिए। इन तीन बातोको सर्वथा नहीं छोड़ना चाहिए।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१७)

****

पूर्वोक्त प्रवृत्ति निवृत्ति और व्यावृति के विधान से कहा गया 'भागवत धर्म' श्रीमदाचार्यचरणो को संमत है। यहां श्रीमव् आचार्यचरणने प्रवृत्ति निरुपणमें 'स्वधर्माचरण सक्त्या' कहा है, उसी को स्पष्ट करनेके लिए श्रीप्रभुचरण कहते हैं - 'भक्तिशास्त्रानुकूल्येन स्वधर्माचरणं भवेत्'। जो शक्ति अनुसार - यथा सामर्थ्य करना चाहिए।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१८)

****

द्विजोंको गर्भाधानादि संस्कारो द्वारा देहका शोधन करना चाहिए, अन्यथा हरिभावकी उत्पत्ति संभव नहीं होती है। क्योंकि देहशुद्धि के बिना आत्मगुण का विकास नहीं होता है।तथा उसके बिना हरिभावोत्पत्ति नही हो पाती है। अतिन्द्रिय जीववृत्ति भावना जबतक पुष्ट नहीं होती, तब तक भगवद् भावकी निष्पत्ति नहीं होती है।।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१९)

****

शुचि-पवित्रता और आचार-विवेक पूर्ण विचार से जो हीन होता है, उसमें आसुरावेश होना संभव हो जाता है । उसके निवारण के लिए तथा दैवत्व की प्राप्ति के लिए यहां आन्हिक धर्मोका आचार - आचरण प्रशस्त मानतें है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (२०)

****

स्नान, संध्या, जप, होम, स्वाध्याय, पितृतर्पण,वैश्वदेव, और देवपूजा / सेवा ये निजाह्निक धर्म है, नित्यकर्म है। ईन्हे करते हुए मनुष्य षटकर्म कर्ता बने ।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (२१)

****

स्कंध, शाखाओं का पोषण, सिंचन वृक्षके मूलमैं सिंचन करनेसे हि होता है। वैसे हि अपने वर्णाश्रम धर्मोका पालन भी भगवत्सेवा के अनुषंगिक स्वरुपमें हि करना चाहिए। क्योंकि मूल - परब्रह्म के सेवन में सभी इतर कर्तव्य उसके सहयोगी होते हैं। भगवत्सेवा रहित व्यक्ति, जो वर्णाश्रम धर्मोका पालन करनेमें तत्पर भी हों तो भी उसमें साफल्य नहीं होता।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (२२)

****

अत: तदनुरोध अर्थात् सेवाके रोधक न होकर सहायक रहें, उस प्रकारसे पूर्वमें जो नित्यान्हिक कर्म कहे गये हैं, उन कर्मों को करना श्रेष्ठ है। अन्यथा यदि वे बाधक बनतें हों तो उनका करना व्यर्थ हो जाता है। क्योंकि ये सब आह्निक धर्म को करनेसे केवल त्रिवर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ,काम पर्यंत ही कर्मफलका प्रकार रहता हैं।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (२३)

****

अपनी अपनी वैदिक शाखाओ में निर्दिष्ट प्रकारसे बतायी पद्धति से संस्कारोसे युक्त हो, द्विज बनकर गुरु की शरणागति-प्रपत्ति प्राप्त करें। अन्य जो संस्कारहीन स्त्री शुद्रादि जन है, वे संस्कार युक्त जीवोके सत्संग से - व्यवहारसे अथवा गुरुके उपदेश के कारण सदाचार ग्रहण करके गुरुके शरणमें जावें। वैष्णवके संगसे या गुरुके उपदेश से सदाचार युक्त होकर - शुद्ध प्रकृति होकर शरणागति प्राप्त करें, यह तात्पर्य है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (२४)

****

आचार्यसे प्रपत्ति - 'शिष्यस्तेहं शाधि मां त्वां प्रपन्नं' इस प्रकार गीतोक्त भावसे प्रपन्नता स्वीकार करने पर, उनका अनुग्रह प्राप्त करके मनुष्यको, श्रीकृष्ण की शरण को प्राप्त करना चाहिए - अर्थात् अष्टाक्षर मंत्र की दीक्षा लेनी चाहिए। तदनन्तर वैष्णव होने पर वैष्णव चिन्हो के रुप में कंठमें तुलसीमाला और तिलक धारण करना चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (२५)

****

गुरु के अनुग्रह से श्रीकृष्ण की शरणागति को अष्टाक्षर मंत्रोपदेश द्वारा प्राप्त करता है, तब वह शुद्ध - निर्दोष - संस्कारयुक्त हो जाता है, वैष्णव बन जाता है।उसके बाद माला-तिलक आदि बाह्य चिन्हो को धारण करके, प्रथम

वैष्णवाचार रुप जीवन प्रणाली को अपनाकर पहिले सर्वस्व श्रीहरिको समर्पित करनी चाहिए। भगवत् शरणागति को स्वीकार करके जीवात्मा अपने अहंकार पर शमन करना प्रारंभ करता है। तदनन्तर वैष्णव चिन्ह धारण करके अपना सर्वस्व आत्मनिवेदन द्वारा 'मैं और मेरा सब कुछ' श्रीहरिको निवेदित करनेसे, अपनी लौकिक में बांधे रखनेवाली 'ममता' को श्री प्रभु में परावृत। करके श्रेय: प्राप्ति क्षके मार्ग की प्रतिबंधक रुकावटों को उसे दूर करना चाहिए, यह तात्पर्य है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (२६)

****

वैष्णव बनने के पूर्व जीवन चर्यामें प्रयुक्त पात्रोको, बर्तनोको अशुद्ध अखाद्य व्यवहार प्रयुक्त होनेके कारण परिवर्तित करके, जीवनव्यवहारोपयोगी स्थान, पात्र, वसन आदि को शुद्ध करके, वैष्णवाचार तत्पर बनना चाहिये । आत्मनिवेदन के द्वारा 'देहजीवयो: सर्व दोष निवृत्ति:' करनेके पूर्व यह व्यावहारिक शुद्धिका प्रकार कहा गया है, जिससे पून:कोई संसर्ग दोष समुत्पन्न न हों।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (२७)

****

श्रीहरिके गुणगान का श्रवण पूर्वोक्त प्रकारसे करना चाहिए। तदनुसार अच्छी तरह श्री भागवत के तात्पर्य का ज्ञान, स्वयं शास्त्र चिंतन और पठनके द्वारा करना चाहिए। और श्रवण करें तो भगवद् भक्तके मुखसे करना चाहिए। इस श्रवणकी प्रक्रिया स्पष्ट करने हेतु 'ज्यायेभ्य: श्रुणुयात्' कहा है। भक्त भी कैसा हो, केवल पल्लवग्राही पांडित्यवाला नहीं, अपितु 'ज्यायान्' अर्थात् वयोवृद्ध अथवा प्रशस्य याने अनुभव सिद्ध याने ज्ञानवृद्ध हो। अन्यथा कथा केवल मनोरंजन का विषय बन जाती है। उससे श्रोताको क्षणिक आनंद प्रदान करती है, किन्तु मनन योग्य ज्ञान नहीं।

(वर्तमान में कथा का यही रुप देखनेमें आता है)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (२८)

****

ऐसे भगवदीय जो 'संकीर्तन रुप यज्ञ से यजन करनेवाले बुद्धिमान' होते हैं, वे उक्त कीर्तन में ही सबकुछ प्राप्त कर लेते है, क्योंकि ईस कलिमें यह श्रेष्ठ साधन है। भगवद् चरण सेवनके अतिरिक्त और कोई उपाय साक्षाद् अनुभूति संपादन करानेवाला नहीं है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका' (२९)

****

प्रतिदिन श्रीहरि की अर्चना, शास्त्रोक्त पध्धति से करनी चाहिए, तथा वह भी नियमपूर्वक। भगवान का प्रतिदिन अर्चन करने का तात्पर्य वही है, जो पूर्व श्लोककी व्याख्यामें श्रीआचार्यचरणोकी उक्तिके रुप में 'अच्छिद्र सेवा' के रुप में कहा गया था। अत: सेवा- अर्चन -पूजा यथाधिकार नित्य और नियमपूर्वक करनी चाहिए। अर्थात् भक्तिमार्गके विधान -

रीति - के अनुसार करनी चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (३०)

"******************

श्रवणसे लेकर दास्य पर्यंत की सप्तविध भक्तिके प्रकार प्रपन्न भक्तके साधनाधिकार क्षेत्रमें आता है। प्रपत्तिके बाद भक्त साधन रुपा श्रवण भक्तिका आश्रय ले कर दास्य भाव पर्यंतकी भक्ति प्राप्त कर सकता है। ईतना जीवात्माके प्रयत्नसाध्य साधनो का निरुपण है, जिसमें प्रवाहमार्ग से मर्यादामार्ग में प्रवेश, फिर धीरे धीरे दास्य भावको प्राप्त करके मर्यादा से अनुग्रह मार्गमें प्रवेश यहां सूचित होता है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (३१)

****

यहां 'विष्णु पंचकव्रत' कहा है, जो पद्मपुराण अनुसार कार्तिक मास के अंतिम पांच दिन के उपवास बताया है, किन्तु श्रीप्रभुचरण चार जयंति सहित एकादशी व्रतको 'विष्णु पंचक' के रुप में कह रहे हैं। व्रतोत्सव निर्णय समझाते हुए कहा है - एकादशी दशमी विद्धा ग्राहृय नहीं होती है और जन्माष्टमी सप्तमी विद्धा नहिं करनी चाहिए। जयंती सूर्योदयव्यापिनी माननी चाहिए, यदि वह अन्य से विद्ध न हो, दुष्ट न हो। अन्य व्रतोमें तिथीयोंमें भी उदयात् ही ग्राहृय करनी चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (३२)

****

समग्र वर्षमें क्रमश: समायोजित किये जानेवाले उत्सव - श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, इतर जयन्ति, दशहरा, रासोत्सव, दीपोत्सव, अन्नकूट, प्रबोधिनी, वसन्तोत्सव, दोलोत्सव, जलयात्रा,रथयात्रा, हिण्डोला-झुला उपरांत श्रीमदाचार्यचरणोका प्राकट्योत्सव और तद्वंशसंभूत आचार्य मनीषियोके जन्मोत्सव आदि प्रकारसे ग्रहण किये है। ये वर्षाश्रित उत्सव कहे जाते हैं। वर्ष भी ईन्हीं में समाविष्ट होते हैं।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (३३)

****

श्राद्ध - पितृगणोके उद्देश्य से श्रद्धापूर्वक दिये हुए अन्नादि दानके स्वरुप में होता है। ये श्राद्ध उत्तम ही है, तथा वैश्वदेव भी देवक ही है। तात्पर्य यह है की यह पितृगणकी संतुष्टि और देवगण की संतुष्टि श्रीहरि के प्रसाद द्वारा ही की जानी चाहिए। श्राद्धमें भी भगवद् प्रसाद का उपयोग और वैश्वदेवमें (पंचयज्ञात्मक) भी भगवत् प्रसाद का उपयोग ही करना चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (३४)

****

प्रसादको देवपितृ कार्यमें उपयोग करने का जैसे पूर्वमें कहा गया है, उसी तरह अन्नके संस्कारमें भी प्रसाद का उपयोग ही करना चाहिए। 'बली' शब्दका अर्थ यह है की देवादि के लिए या प्राणादिके लिए जो अन्न दिया जाय वह बलि कहलाता है। अत: कहा है - अन्नका और अपने आपका (आत्माका) संस्कार स्वरुपसे प्रसाद बलि रुपमें प्रदान करना चाहिए। तथा 'तत्पर:' जो कहा - वह भगवद् भक्ति पर जो होते हैं, उन्हे भगवत्प्रसाद के द्वारा ही ये पूर्वोक्त सब कार्य सम्पन्न करने चाहिए।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (३५)

****

विप्र, गाय और हरिभक्त ये सभी हरिको प्रिय होने के कारण विशेष पूज्य है। भगवत् प्रियजनोका आदर करना वैष्णवके सदाचार का अंश होता है। गृहस्थको सदा अतिथि का समादर करना चाहिए, क्योकि वह पूज्य होता है। उसी प्रकार दीन-दुखिया जन भी पूज्य-आदरणीय होता है, तदर्थ उसे सर्व प्रकारसे सुश्रृषा देना भी गृहस्थका धर्म होता है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका (३६)

****

जगन्नाथपुरी में, श्रीद्वारकापुरीमें, श्रीरंगक्षेत्रमें, एवम् व्रजमंडलमें भक्तोको भाववृद्धिके लिए रहना चाहिए। क्योंकि जगन्नाथपुरी - श्रीपुरुषोत्तम क्षेत्र है। श्रीद्वारका - श्रीकृष्ण पालित क्षेत्र है। श्रीरंगक्षेत्र आसुरभाव संहारक रुपसे विद्यमान श्रीरंगनाथजी का क्षेत्र है, ईसलिये श्रीप्रभु वहां दक्षिणाभिमुख बिराजमान है। तथा व्रजमंडल तो भक्तश्रेष्ठोकी, गायोके पदरजयुक्त भूमि है, महारासका क्षेत्र है। इससे भक्तोके निवास हेतु श्रेष्ठ स्थान है, एवं जो पूजा - प्रवाह के जीव है वे उन क्षेत्रोमें में ही रहे जहां इस क्रम का संग साथ उपलब्ध हों, तीर्थादि क्षेत्र हो।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (३७)

****

यदि पूर्वोक्त प्रकारको संपादित करनेके बाद भी गृहकी अनुकूल स्थिति न हो, पारिवारिक उदासीनता सेवा में रहे तो भक्तको गंगादि तीर्थोमें वास करके 'नामसेवा' का प्रकार ग्रहण करना चाहिए। श्रवणादि साधनोके द्वारा नामसेवा-जप करें तब स्वभाव पर नियंत्रण आवश्यक होता है, और तीर्थोमें अच्छे बुरे सभी अनुभव होते हैं। श्रीभागवत पीयूषका कर्णपुटोमें श्रवणादि द्वारा रसपान करनेसे तथा पून: गुणगान कीर्तनादि करने से भक्त अवश्यमेव भगवदनुग्रहके पात्र बन जाते हैं।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (३८)

****

प्रवाहमार्ग से जब भक्त मर्यादामार्ग में पूर्वनिर्दिष्ठ प्रकारसे स्थित होकर कृपामार्गमें पुष्टि प्राप्त करने हेतु प्रविष्ट होना चाहता है, तब चित्तशुद्धिपूर्वक प्रपन्न बनता है। तब उसे कुछ बाहरी चिन्ह - 'उर्ध्वपुण्ड्राणि' द्वादश तिलक निश्चित ही धारण करने होते है। दुसरे बाह्य चिन्ह तुलसी काष्ट माला का विधान किया गया है। ईस प्रकार बाह्य चिन्होको वैष्णव

को धारण करने चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (३९)

****

भगवद् गीताको अवतरीत करते हूए - शम (अंत:करणका संयम), दम (ईन्द्रियनिग्रह), तप: (क्लेश सहन करना), शौच (पवित्रता-शुद्धता), क्षान्ति (क्षमा), आर्जव (निष्कपटता), दया (परदु:ख दूर करनेकी ईच्छा), दान, विज्ञान (चतुर्दश विद्या), श्रद्धा (शास्त्रोमें दृढ विश्वास - चित्तकी प्रसन्नता), इन दश दैवात्म संपदाओको वैष्णवोको आत्मसात करनी चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (४०)

****

पूर्वोक्त दैव आत्म संपदाओ को प्राप्त करनेवाले पुरुष की भक्ति नैष्ठिकी - अविचला हो जाती है। जिससे उस सुदृढा भक्तिके द्वारा उन्हे सर्वात्मभाव स्वरुपा परासिद्धि स्वत: प्राप्त हो जाती है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (४१)

****

ज्ञान और वैराग्य को भक्तिमें प्रवेशके लिए ही उपयोगीता होती है। वे दोनों को चित्तको बनाने हेतु स्वीकार किये गये हैं। एं यह भक्ति तो सुकुमार स्वभावकी कही गई है। पूर्वमें कही गई विरक्ति का उपयोग प्रारंभिक दशामें ही है, उसे भक्तिका एक भाग नहीं मानना चाहिए। प्रारंभिक दशामें संसाराक्त चित्तमें कठोरता से अलग होने जितना ही विरक्ति का उपयोग करना चाहिए। फिर सुकुमार भक्ति में प्रवेश के बाद ज्ञान-वैराग्यकी कठोदतासे पृथक होकर अपने मनको सरल और सुकुमार बनाने से ही कोमल स्वभाववाली भक्तिका उद्गम होता है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (४२)

****

सर्वत्र से विरक्त का अर्थात् समस्त लोकशक्तियुक्त पदार्थो से अनासक्त व्यक्तिका नन्दनन्दन श्रीपुरुषोत्तम में राग - प्रेम हो जायेगा। एवं जब वह प्रेमरुपा परमा भक्ति को प्राप्त कर लेता है, तो उसे प्रपंचकी विस्मृति हो जाती है, सांसारिक बंधनोसे वह मुक्त हो जाता है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (४३)

****

इस प्रकार चित्तका निरोध हो गया है जिनका, जो प्रेम आसक्ति और व्यसनानंद दशा को प्राप्त कर चुके है, तथा जिन्हे प्रपंचरुप ईन सांसारिक भावों से मुक्ति मिल गयी है, और हो प्रेमरुपा भक्तिसे जो सम्पन हो चुके हैं, एसे भगवदीय भक्त का ही भगवानकी लीलामें प्रवेश होता है। उसी को 'अपीष्टश्च' कहा गया है। यह भगवल्लीला प्रवेश ही भक्तका अभीष्ट

है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (४४)

****

पूर्वमें कहे अनुसार जो भगवदीय बन जाता है, वह पाप तो करता ही नहीं है, किन्तु प्रमाद - असावधानी से यदि कोई भूल हो जाती है, तो शीघ्र ही उसके निवारण का उपाय भी हो सकता है। मनमे परिताप करने से वह दूर भी हो जाता है। श्रीप्रभुका नाम 'हरि' है, क्योंकी वे स्वयं भक्तके पापोको - प्रमादसे की हुई भूलोंको - तद्दोषोको हर लेतें है। उसी से उन्हे 'परागति' कहा है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (४५)

****

सर्वात्मभाव युक्त ही हरिभक्त होता है, तो ऐसे भक्त के अपराधो में श्रीहरि दया करके प्रसन्न हो जाते हैं और क्षमा प्रदान करते हैं। ब्रह्म के साथ संबंध होने पर पूर्वापर दोषों की निवृत्ति हो जाती है, किन्तु वे दोष फिर न बने इसकी सावधानी तो अपने को ही रखनी होती है। इससे कहा है "संपरिवर्जयेत" , अर्थात् - समर्थक प्रकारसे दोष बननेसे रोकना चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (४६)

****

लव, घड़ी, मुहुर्त, याम (प्रहर), दिवस, आदि को सूना नहीं छोडना चाहिए, प्रतिक्षण का उपयोग भगवत्कार्य - भजन सेवन में लगाय रखना चाहिए। अन्यथा संसारासक्ति हो जायगी। संसारासक्ति से मस्तिष्कमें आसुरावेश हो जाना एक स्वाभाविक प्रक्रिया होती है, जिससे भगवत्प्राप्तिमें बाधा उत्पन्न होती है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (४७)

****

गुरु सेवनसे सब कार्य सिद्ध होते हैं। इसलिए प्रपन्न होकर गुरु सेवा करें। इसके बाद गुरुकी आज्ञानुसार भगवद् सेवा करें। गुरु में साक्षाद् भगवद् भाव ही रखना चाहिए, उनमें भेदबुद्धि नहीं रखनी चाहिए। गुरु में अनादरादि कोई अपराध न हो, इससे सावधान रहना चाहिए। गुरु के अनुग्रह से ही भगवद्रति रुपा सिद्धि प्राप्त होती है। गुरु की प्रसन्नता संपादन के बाद भगवदीय जनोकी कृपा प्राप्त करनेके उपयोका निर्देश करतें है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (४८)

****

भक्तवृन्दोको नमन करें, सर्वदा भक्तवृन्दोका आदर करना चाहिए। भक्तवृन्दो का स्वागत दृष्टिमें भी हर्ष हो इसतरह करना चाहिए, दिखावे के लिए नहीं। भक्तवृंद जब उस भक्तके द्वारा किये गये स्वागत सत्कार में हृदयकी प्रसन्नता

का अनुभव करतें हैं, तभी वे भी प्रसन्नतापूर्वक उस पर कृपा की अनुभूति करतें हैं। अतः भगवदीय सत्संग, परिचर्या, भी भगवत् कृपा प्राप्त करनेके लिए करनी चाहिए।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (४९)

****

भक्तजनोके संगके बिना, प्रकर्ष रुप से संग अर्थात् प्रसंग - सत्संगके बिना भावपोषण, सद् गुरु की कृपा के बिना मार्गदर्शन और श्रीभागवत शास्त्र के बिना भगवन्महात्म्य चिंतन नहीं हो सकता है, तो भगवद्रुपा भक्ति होगी ही कैसे ?

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (५०)

****

शुद्ध पुष्टि की मनोदशा को अभिव्यक्त करनेके लिए कहते हैं - "विना गद् गद् कण्ठेन" । भगवद्रुपा रसभावमें लीन हो गद् गदर कंठ हो जाना, चित्त द्रवीभूत होना, लीला गुणगान करते हुए, नृत्य करते हुए, भगवद् भावावेश युक्त हो जाना ईत्यादि अवस्था न हो तब तक हरि प्रीति कैसे हो सकती है !

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (५१)

****

यहां गीता का ही श्लोक उध्धरत किया है - 'यह मेरी, मेरे गुणोवाली दैवी माया - जो रसदानकी ईच्छासे प्रकट की गई है, ईसीसे "दुरत्यया" है, अर्थात् दुःख सहन करने पर भी जो जीती नहीं जा सकती, तपस्याके क्लेश सहने पर भी नहीं। इस माया को, जो केवल मुझको ही अनन्य भावसे - पुरुषोत्तम को ही शरण मान शरणागत होते हैं, वे लोग ही इस मोहन करनेवाली माया को पार कर लेते है।'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (५२)

****

भगवान ने पूर्वमें अपने आपसे अपने आप स्वरुपसे जगत क्रीडाके लिए बनाया, अर्थात् सर्वरस भोक्ता राजा के समान आत्मरमणार्थ स्वस्वरुपात्मक प्रपंचको बनाया, यह तात्पर्य है। भगवान के आनन्दमय स्वरुप - देह से जो सृष्टि प्रकट हुई वह सर्वोत्तम - श्रेष्ठ है, क्योंकि वह लीला सृष्टि है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (५३)

****

जैसा श्रीमदाचार्यचरणोने कहा है तदनुसार जो लीला सृष्टि उत्पन्न हुई है, वे ही मुख्य अधिकारी है। एवम् जो लाभांश संभव मर्यादामार्गस्थित भारत है, उनके लिए भी भजनानन्द की उपलब्धिके लिए पूर्वोक्त सेवा ही साधन रुपा है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"साधन दीपिका" (५४)

****

जिस व्यक्ति पर ये रसात्मा प्रभु आत्मभावित रुप में अनुग्रह करतें हैं - वह लोकमें और वेदमें परिनिश्चित बुद्धिको छोड देता है। तात्पर्यकी जब भक्त भगवन् माहात्म्य आदिका श्रवण कर प्रभुके स्वरुपको अपने ह्रदय में ध्यान द्वारा अवस्थित करता है और गहन भाव युक्त चिंतन करता है, तब उस आत्म-भावित रुप में श्रीहरि भक्त पर अनुग्रह करतें है, जिसके कारण उसकी बुद्धि में लोकमें विरक्ति हो जाती है और वैदिक मर्यादाओंमें, नियमों की प्रतिबद्धता भी छुट जाती है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"साधन दीपिका" (५५)

****

पूर्वोक्त प्रकरसे जो भगवत् सेवन करतें हैं, वो नियोज्य भगवान के सेवक होते है। अत: जो भगवद् दास होते हैं, उसीपर श्रीहरि का अनुग्रह होता है। यहां "यमे वैषवृणुते...." ईत्यादि श्रुतिओकी संमतिका संग्रह है। "महतां समयों मानं" वाक्यसे महापुरुषों की अनुभवोक्ति का प्रमाण दिया है, क्योंकी महापुरुष या महानुभाव इस पुष्टिमार्गमें वे ही कहे जाते हैं जो हरिके प्रिय होते हैं।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"साधन दीपिका" (५६)

****

भगवद् वरणकी प्राप्तिके लिये तदनुरोधेन - तात्पर्य - ह्रदयमें रतिरास, स्नेहका विलास हो सके श्रीगोपाल महामनु- श्रीगोपाल महामंत्रका वरण करना चाहिए। निर्गुण पुष्टि भक्तिमार्गमें किसी भी मंत्र की सकाम साधना निषिद्ध है। प्रेमलक्षणा भक्तिका तीव्र उद्रेक संपादित करनेवाला यह मंत्र है। अत: उसका वरण करे, क्योंकि यह चरणाश्रया भक्तिसे वदनाश्रया त्मनिवेदनभक्ति पर्यंत पहुंचने के मार्ग को त्वरित गति से प्राप्त करा सके।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"साधन दीपिका" (५७)

****

"नायमात्मा प्रवचनेन लभ्य: न मेधया, न बहुधा श्रुतेन, यमे वैष् वृणुते तेने लभ्य: " इस श्रुति वचनमें भगवद् प्राप्तिमें भगवान द्वारा 'वरण' को ही साधन बताया है, जो वरणका स्वीकारात्मक रुप है, क्योंकि वरण अनुग्रह जन्य ही प्रमाणभूत होता है। वरण कों छोड़कर प्रपन्न भक्तको, आत्मनिवेदको को ही सम्यक प्रकारसे वरण कहतें है। श्रीप्रभुचरण इसीको 'वृतं वृणुते' पदसे बतलाते हैं।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"साधन दीपिका " (५८)

****

अपनी विप्रयोगाग्नि का स्मरण करके संसारसागर में जीव तीव्र प्रज्वलित अग्निपिंडरुप के स्वरुपसे तिनकोके रुपमें जीवात्मा स्वरुप उत्पन्न होकर परमात्मासे अलग होनेका वियोग सहन करता है। 'तापदाह' से तात्पर्य है - ब्रह्मसंबंध

द्वारा ब्रह्मसे संबंध तब जुडता है जब अहंता-ममताके त्यागपूर्वक प्रपंचमें◌ंसे आसक्ति निवृत्ति होती है। जब अष्टाक्षर व पंचाक्षर से संपुट गद्यमंत्र द्वारा आत्मनिवेदन होता है, तब निवेदित पुष्टिपथिकको श्रीगोपालमंत्र का आश्रय करना चाहिये।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका " (५९)

****

इष्ठ - यज्ञ अथवा अभिलषित, दत्त - दिया हुआ, तप - तपस्या, जपं- सकाम जप अथवा प्रार्थना, वृतं - सेवा अथवा वरण किया हुआ एवं - अपने आत्मीयजन जिनमें हमारी ममता होती है वे - स्त्री, पुत्र, गृह अधवा गृहस्थ जीवन, प्राणेन्द्रियान्त कर्म, आदी सभीका पर याने परमात्माके लिए निवेदन करना अर्थात् आत्मनिवेदन करना चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (६०)

****

इस प्रकारसे भागवत धर्म से शिक्षा भक्ति से उत्पन्न भक्तिके द्वारा - परम प्रेमरुपा प्रेमलक्षणाक भक्तिके द्वारा नारायण-पर (परायण) जब भक्त होता है, तब ब्रह्म के साथ संबंधित होकर, अहंता-ममता की निवृत्ति और प्रपंचासक्ति की निवृत्ति होनेपर जो भक्तिका स्वरुप बनता है, अर्थात् वह फलरुपा - पराभक्तिके रुप में परिणित होती है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (६१)

****

ईस प्रकार योगीश्वरो द्वारा कहे गये भक्तिमार्ग के द्वारा - महाराज निमि और नव योगीश्वरो के संवाद रुप में जो भक्तिमार्ग समझाया गया है, उस मार्ग पद्धति से - भागवत धर्म पद्धतिसे जो श्रीहरि का यजन-सेवन करता है, वह कलिके पंचविध दोषो को पार कर आगे बढता हुआ परम पद को प्राप्त करता है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (६२)

****

अवैष्णवजनों के साथ न रहे, उनसे अलग रहने से उनके भिन्न विचारोंके प्रभाव अपने मनकों भटका न दे। इससे सहज व देशकालोत्थ दोष न बन पायें, यह कथ्य है। न हीं ऐसे लोगों से संपर्क रखें। स्वगृहमें लौकिक वैदिक कार्य - प्रसंगावसरोमें श्रीहरि का स्मरण - ध्यान करे, जिससे लोकवेद निरुपित दोष भी निवृत्त हो, तथा मंत्रस्नानसे स्पर्षज दोष निवृत्त होते हैं। इस प्रकार पंचविध दोषोकी निवृत्ति के उपाय बताए हैं।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (६३)

****

श्रीप्रभुकी सेवा में पूर्वमें कहे गये स्नानके प्रकारसे देहादिकी शुद्धि करके सेवा करनी चाहिए। इसी प्रकार हाथोंकी शुद्धि भी विशेषतः करनी आवश्यक है। सखडी - अनसखडी की मेंड तथा प्रसादी - अनप्रसादी का स्पर्श आदि में मर्यादाका

ध्यान रखना चाहिए। ऐसे ही अपने उपयोग में आनेवाले पात्र व भगवद् उपयोग के पात्र एवम् प्रभुके स्नानादिके पात्र झारीजी आदि तथा अपने उपयोग के पात्र पृथक रखने चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (६४)

****

पूर्वोक्त प्रकारकी शुद्धाशुद्धि वस्त्र आदि वस्तुओमें भी विचारनी चाहिए। 'अपरस' आदि की प्रक्रिया स्वमार्गीय वैष्णवोसे समझे। अपने भक्ति शास्त्र के आगमाचार को सदा गुप्त रखना चाहिए। अवैष्णव से चर्चा करने से मतिभ्रम, संदेह आदि होना सहज संभव है। अपने जप, ध्यान, सेवा, भावना आदि का अन्यसे चर्चा न करें, गुप्त रखें। श्रीप्रभुको निवेदनार्थ की जानेवाली पाक सेवा - सामग्री निर्माण प्रक्रिया भी गुप्त रखें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (६५)

****

सुवर्णके, चांदी के, ताम्रके तथा अन्य पात्रो को भगवदुपयोगमें पाकादि प्रकारसे व्यवहृत करने चाहिए, अर्थात् यही हमारी प्राचिन आचार परंपरा में व्यवहारमें लिया जाता रहा है। तथा पाकसेवामें सहयोगार्थ अपने आत्मीय, बंधु बान्धव, सतीर्थ, ब्रह्मसंबंध दीक्षादियुक्त सदाचारी भगवद् भक्तोको, सेवक रुपमें सवर्ण जनोको नियुक्त करने चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (६६)

****

भगवदुपयोगी सामग्री पाकादि सब वस्तु स्वयं भी पवित्र होकर निवेदन करें। श्रीप्रभुके समक्ष जो पात्र सामग्री धरनेके उपयोग में आते हैं, वे पूर्ण भरे हुए ही रखने चाहिए। भगवत्सेवामें, अपने उपयोग में भी दो मुखवाले पात्र - झारी करुवा आदि पात्र शुद्ध माने जाते हैं। लोमज वस्त्र पवित्र होते हुए भी सेवा में वर्ज्य है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (६७)

****

कापसि - सूती वस्त्र धोने पर शुद्ध होते हैं। शुद्ध सुखाये हुए अस्पृष्ट वस्त्र पवित्र होते हैं। एवं सूती वस्त्रोको नये रंगसे रंजित करने पर भी वे पवित्र हो जाते है। जिन तीर्थोमें ब्राह्मण निवास करतें हो वे तीर्थ भी पवित्र होते हैं।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (६८)

****

किसी भी देवकी उपासना की कामना से कहीं जाना नहीं चाहिए। तीर्थयात्रा करें तो अपने ईष्टदेवका ध्यान करके ही करना चाहिए। तीर्थोमें कर्मकाड पौरोहित्यादि वृत्तयुक्त भूदेवो का समर्थन करना चाहिए और तीर्थके रुप में देवका समर्चन भी करें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (६९)

****

सन्यास और अग्निहोत्र वर्तमान कलिकालमें यथाविधि संभव नहीं दिखाई देते हैं। इनके साधन में प्रयत्न करने पर भी वे हो पानेकी संभावना नहीं होने से, उसके अभाव में सन्यास फलकी प्राप्ति कराने में असमर्थ हो जाने से पश्चाताप ही प्रदान करता है। तथैव संदिग्ध धर्म - सेवा आदि कार्य भी अल्पमतिवाले लोगोंको मानसिक क्लेश - परिताप उत्पन्न करनेवाला हो जाता है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

*साधन दीपिका" (७०)

****

तपस्विओका वेश धारण करके गुजर-बसर चलानेवाले शुद्र दान ग्रहण करने लगेंगे और जो लोग स्वयं धर्मको नहीं समझते ऐसे लोग उत्तम आसन पर बेठकर धर्मका उपदेश करने लगेंगे। ऐसी अवस्था कलियुग में हो जायगी। एवं सन्यास ग्रहण करनेके बाद नियम पालन न करने से अथवा त्याग देने से वह पतित कहा जाता है। उसकी गतिका कोईभी शास्त्रीय मार्ग दिखलाई नहीं देता।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (७१)

*********"********

यथा पूर्वमें चतुर्थ आश्रमकी दुष्करता कही है, उसी प्रकार वर्णधर्मसे गार्हस्थ धर्म भी दुष्कर है। किन्तु गार्हस्थ तो 'आपातपतित' है, सिर पर आ गिरा है।तब वह देहयात्राके भोजनके समान आवश्यक बन जाता है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (७२)

****

गार्हस्थ के बिना देहयात्रा धर्म भी सिद्ध नहीं होता है। अत: इस गार्हस्थ धर्म के सभी वर्ण-धर्मोको सभी वर्ण धर्मोका साधक माना जाता है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (७३)

****

यह गृहस्थाश्रम कूर्मपूराणमें दो प्रकारका कहा गया है। इसमें प्रथम उदासीनको अभीष्ट नहीं माना जा सकता, क्योंकी उसमे ज्ञानमार्गोक्त त्याग प्रकट होता है। द्वितिय प्रकार में जो ग्रही कहा गया है, वही भक्तजनोके लिए उपयुक्त है।क्योंकी गृहस्थ पुरुष घरके दु:खकारक कपट कर्मोमें लगे रहकर दु:खोका प्रतिकार कर सकता है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (७४)

****

शुद्रको हिंस्र कार्योमें से और अभक्ष्य भक्षण से निवृत्ति लेनी चाहिए। पुर्णत: पवित्र होकर महापुरुषोके अनुग्रह से प्रपन्न होकर सेवा-भजन करें। ऐसे व्यक्ति पर हि महज्जन कृपा करतें हैं।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (७५)

****

विनम्रता, पवित्रता, स्वामीकी निष्कपट भाव से सेवा करना, मंत्र रहित यज्ञ करना, चोरी न करना, सत्य बोलना तथा गौ, और ब्राह्मण की रक्षा करना शद्रके सहज कर्तव्य है। उसके इन कर्तव्य पालन सेही श्रीहरि शिघ्र प्रसन्न होते हैं।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका'' (७६)

****

दान - देव, ब्राह्मण को द्रव्यादि प्रदान करना, व्यर्थ - नियम पालन - पितृ संबंधि कर्म, शौच - पवित्रता, शान्ति - चित्रण का उपशमन, ईत्यादि गुणों का आश्रय सेवक का कर्तव्य है। तथा प्रेमपूर्वक श्रीहरि का भजन सेवन करना चाहिए। इससे भक्त शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त कर लेता है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दिपिका" (७७)

****

उपरोक्त कर्तव्य सावर्णिक सदाचार है, शुद्र को विशेषतः वेद का श्रवण नहिं करना चाहिए। उपनयन के बिना वह वर्ज्य है। इससे वैष्णव भक्त को उसकी अपेक्षा भी नहीं है, तथा शास्त्र मर्यादा का पालन भी आवश्यक है। भक्तको अन्य भक्तोकी स्पर्धा प्रतियोगिता वा होड़ नहीं करनी चाहिए। एवं असूया - ईर्षा या परगुणोमें दोषारोपण नहीं करना चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दिपिका" (७८)

****

सधवा स्त्रीको श्रीकृष्णकी सेवा पतिके भावसे करनी चाहिए। एवं विधवा हो तो पुत्रभावसे करनी चाहिए। भगवत्सेवामें श्रीहरि सर्वभावात्म स्वरुपके भावात्मक भेद से भी कोई अंतर नहीं होता है, श्रीप्रभु तो सभी रुपमें एकरुप है। यदि विधवा स्त्री साध्वी और जितचित्तेंद्रिया नहीं हो जाती है तो शुचिता की संभावना नहीं रहती। अत: ईस स्थिति से बचने के उपायो को यहां संकेतात्मक रुप से श्रीमत्प्रभुचरणोंने कहा है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (७९)

****

स्त्रियोंको पति, पुत्र, बंधुजनोंके अनुकूल होने पर ही श्रीकृष्ण प्रभुकी स्वरुप सेवा करना उचित होता है। यदि वे लोग अनुकूल न हों तो भक्तिपूर्वक श्रवण, कीर्तन, स्मरण रुप नामसेवा से ही आत्मसंतोष मानना चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (८०)

****

पारिवारिक प्रतिकुलता होने पर श्रवण-कीर्तनादि त्रिविध भक्तिरुप नामसेवा हि उचित है, अन्यथा गृहक्लेशकी स्थिती हो जाय तो क्लेशयुक्त सेवा प्रभु अंगीकार ही नहीं करतें। उस स्थिति में प्रारंभमें मंदिर सहित बाह्य सेवा जैसे मार्जनी (बुहारी) से मंदिर के आंगन चौक आदि की सफाई की सेवा करनी चाहिए। ईसीप्रकार गुरुघरमें यथा योग्य सेवा करनी चाहिए।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (८१)

****

स्त्रीके स्वतंत्र होने में सामाजिक लोग हमेशा दोष ही देखतें है। इससे कहा है -'सर्वत्र दोषों ही जायते' स्वतंत्र दोषरहिता स्त्रीको भी लोग अन्तर्दृष्टा रुप में लांछित करते हैं, अत: स्वतंत्रतामें दोष कहा है। इस उच्छुंखल स्वभाव को नियंत्रित करनेके लिए उसे उक्त प्रकारसे घरके लोगों की इच्छानुसार ही सेवा, श्रीहरि की करनी चाहिए, भले वह नामसेवा हो या स्वरुप सेवा - दोनों सेवा समान ही है, अत: परिणाम - फिल्में अंतर नहीं होता।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (८२)

****

यदि स्रीके परिवार जनो के लोगों को मंदिर की सेवा (बाहरी) में भी एतराज हो तो, एवं श्रीप्रभु की स्वरुपसेवा में प्रतिबंध हो तो, उसे श्रीप्रभुका चित्रस्वरुप पधराना चाहिए, तथा सुक्ष्मरुपसे सेवाका प्रकार लेना चाहिए। प्रकट रुपसे, अप्रकट रुप से या छलमें भी श्रीकृष्णका भजन सेवा करनेवाली नारी गोपिकाओंकी तरह प्रेमलक्षणा भक्ति प्राप्त कर के संसार चक्रसे मुक्त हो सकती है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (८३)

****

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियोंका हृदय कोमल होता है, अत: उनके कोमल सर्वभाव से हृदय में भगवदनुराग - स्नेह यहां शीघ्र ही 'हृदय संलग्न' हो जाता है। 'अभिषज्यते' - अभि उपसर्गपूर्वक संगार्थक षंज् धातु से भाव में यह रुप संपन्न होता है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (८४)

****

जिस तरह सुवर्णमें रजोमिश्रण दोषकर होता है, उसी तरह कामदोष स्त्री को दोषित कर सकता है। भगवदनुराग का आवेशानुभव करनेके लिये कामदोषको प्रथम जीतना पड़ता है। कामको जीतनेसे क्रोध, लोभ, मोह, मद ईत्यादि की श्रृंखला विजित होती है। तभी स्त्रीजनोके प्रिय श्रीकृष्ण शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (८५)

****

ऋतुमती और प्रसुता स्त्री अस्पृश्य होने के कारण सेव्य स्वरुपके दर्शन - स्पर्श आदि न करें। एवं अपवित्र अवस्थामें पुरुष भी सेव्य स्वरुपके दर्शन - स्पर्शादि न करें। पुरुष यदि अस्नात हो, जनन - मरणाशौच युक्त हो, अस्पृश्यस्पृष्ट हो तो दर्शन स्पर्शनादि न करें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (८६)

****

सिद्धांत सेवा प्रकार भावना आदि को सम्यक् तया नहीं जाननेवाले लोगों के लिये ही चित्र स्वरुप सेवा कही गई है। उन्हें ही चित्र स्वरुप में श्रीहरि को सेवित करना चाहिए। भगवद्रुपत्वके तीन प्रकार - शुचि, श्लेक्ष्णा, अपीच्या श्री हरि की प्रतिमा, श्रीगुरुके द्वारा दी हुई - श्रेष्ठ भगवदीयजनोके द्वारा सेवित की गई या दी गई संपुष्ट रुपा ही सेवानी चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (८७)

****

गुरु द्वारा दी हुई उस भगवत् मूर्ति - स्वरुप जो सेवा योग्य हो, उसको श्रीयमुनाजल से स्नान कराके, अपनी वेद शाखा के मंत्रो द्वारा मार्जन करके संस्कार करावें। तदंतर उस संस्कार युक्त सुमनोहर स्वरुप को यथालब्ध साधन सामग्री के द्वारा सेवित करें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (८८)

****

इस भक्तिमार्गमें भगवत्स्वरुप की प्राणप्रतिष्ठा का प्रकार नहीं है, क्योंकि मंत्रो द्वारा प्रतिष्ठामें श्रीप्रभु के अक्षरब्रह्मात्मक स्वरुप का आविर्भाव हो सकता है। उन्हें ही मंत्राधिनता ग्रहण किये स्वरुपमें स्थापित किया जा सकता है। यहां गुरु द्वारा पूर्वोक्त श्री पुरुषोत्तम प्रतिष्ठा प्रकारसे यद्वा स्वरुप स्थापन के प्रकारसे अथवा भक्तिमार्गीय पद्धतिसे तदुच्चारित शब्दार्थसे भी पात्रकी शुद्धता संपन्न हो जाती है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (८९)

****

पूर्वोक्त भगवत् मूर्ति - स्वरुप में किसी कारण से अपवित्रता प्रतीत हो तो अपवित्रता स्पर्शादि दोष निवारण कर - शुद्धता संस्थापित करनेके लिये, जिस प्रकार हम अपने अशुद्ध होने पर स्नानादि द्वारा शुद्धि करतें हैं, उसी प्रकार से शास्त्रोक्त पद्धति से पंचामृत स्नान, हवन, दानादि के द्वारा शोधन करना चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (९०)

****

अपने सदगुरु द्वारा प्रदान किया हुए सेवनार्थ भगवत् स्वरुपको अथवा स्वयं द्वारा लाया गया (तदभावे स्वयं वापि)

स्वरुपको साक्षात् श्रीप्रभुको वहां स्थित मानकर सेवन करें। पूर्वमें किसी भगवदीय द्वारा भावपूर्वक सेवित किये जाने से मूर्ति में स्वरुपाविर्भाव शीघ्र हो जाता है। यदि सेवा करते करते कभी स्वल्प स्वरुप में खंडित हो जाय तब मर्यादा भक्तिमार्ग के समान वह असेवनीय नहीं हो जाता है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (९१)

****

प्रात:कालसे प्रारंभ कर के मध्यान्ह पर्यंत मंगला आर्ति, श्रृंगार, ग्वाल, भोगार्पण, राजभोग आर्ति पर्यंत सेवा करें। एवं अपरान्ह में उत्थापन, भोग, सन्ध्या आर्ति, शयनभोग, शयनार्ति पर्यंत सेवा, समय समय की तल्लीलाओका अनुभावन करतें हुए यथा गरुके आदेशानुसार करें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (९२)

****

देश, काल, साधनसम्पन्नता के अनुसार - स्वशक्तिके अनुरुप यथालब्ध उपचारों के अनुकूल विभिन्न वस्त्रो, आभुषणों के द्वारा, चंदन कर्पुर कुसुमानुवासित इत्र आदि गंधोके द्वारा, अष्टायाम निर्दिष्ट प्रकारसे, विविध नैवेद्य प्रकारो से शुभ, शुद्ध प्रक्रिया से सेवा मनोहर रुप से श्रीप्रभूको समर्पित करनी चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (९३)

****

उपरोक्त प्रकार से भगवान की प्रेमपूर्वक - स्नेह से तथा अनुद्वेग से कृष्णभक्त साधु - सत्पुरुष - सज्जन सेवा करें। बिना क्रमभंग किये यावत् जीवन सेवा करने से भक्तकी भावना सिद्ध होती है, जिससे वह कृतकृत्य हो जाता है।,
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (९४)

****

प्रात:काल ब्राहम मुहूर्त में बिस्तरसे उठकर वह भगवद् भक्त वैष्णव पवित्र होकर, हाथ-मुंह धोकर, ध्यानपूर्वक , पूर्ण मनोयोग से भगवान की विविध लीलाओं का स्मरण और चिंतन - अनुसंधान पूर्वक भगवद् गुणोको पदगान रुप से वाणीसे गान करें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (९५)

****

पूर्वोक्त प्रकारसे भगवद् ध्यान, स्मरण और गुणगान करनेके बाद, बाहर जा कर शौचादिक कृत्यसे निवृत्त होकर धर्मशास्त्रोक्त प्रकारसे हाथ पैर शुद्ध करके दन्तधावनादि मुख शुद्धि करें, फीर सुवासित तैल मर्दन कर के सिर सहित अभ्यंग स्नान करे, जिससे सेवा में गंधादि दोष बाधक न बने। ये क्रम नित्य करना चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (९६)

****

देहकृत्य के बाद घरमें 'मलस्नान' करना चाहिए। (मलस्नान से तात्पर्य है - इस स्नान से शरीर के बारह मलो की शुद्धि की जाती है) यह स्नान गर्म जलसे अथवा समशीतोष्ण मिश्र जलसे किया जाना चाहिए। इस स्नानके बाद श्रीयमुना जल से(श्रीयमुनाजी की स्तुति करके) कलश धारा स्नान करना चाहिए।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (९७)

****

यदि तीर्थस्नान के लिए जाते हैं तो घर पर, या तीर पर कलश से मलस्नान करके ही तीर्थमें डुबकी लगानी चाहिए। सशिरस्क डुबकी लगाने को 'मज्जन' कहते हैं। फिर स्नान करके शुद्ध 'कौशेय अम्बर' (रेशमी) वस्त्र - युग्म अर्थात् धोती-उपरणा दोनों धारण करना चाहिए।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (९८)

****

गृहस्नान, तीर्थस्नान दोनों करके चरणपादुका धारण करके ही गृह जाना चाहिए।, एवं कहीं भी अपावन स्पर्शसे बचना चाहिए, अर्थात् 'अपरस' में रहना चाहिए। गृह में आ कर द्वादश अंगों में श्रीहरि के नामोच्चार पूर्वक द्वादश तिलक धारण करने चाहिए।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (९९)

****

भगवद् नामोच्चारपूर्वक गोपीचंदनसे मुद्रा धारण करनेके बाद चरणामृत पान व अभिषेक स्नानोदक से निर्मित 'मृत्पिंड' रुप चरणामृत भी लेना चाहिए और हाथ को समग्र देह पर लेप करनेके प्रकारसे फिरा कर पूर्ण देह का शोधन कर सर्वदोष निवृत्ति रुप में भगवत्सेवोपयोगी बनाना चाहिए। श्रीयमुनाजीका स्तवन भी तनुनवत्व संपादनार्थ किया जाता है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१००)

****

चरणोदकादि ग्रहण करने के पश्चात् तुलसी पत्र चुर्ण अथवा पत्र मात्र ग्रहण करें, जो तेजस् तत्त्व शोधक है। फिर तुलसी माला को कंठमें धारण कर के संध्यावंदन करें। (पृथकशरणमार्गमें तुलसी माला नित्य धारण करने का उपदेश है). फिर परिवार जनों के साथ भगवत्सेवा करनी चाहिए जिससे सेवा सुगम और सुकर हो जाती है, वह उद्वेगकारिणी नहीं रहती।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१०१)

****

'हरिपदं' अर्थात् हरिके धाम - अक्षरब्रह्मात्मक रुप भगवन् मंदिर की और पैदल चलते हुए जाय, भगवत् मंदिर में यान और पादुकाओ का निषेध है। मंदिर में जाकर, द्वारपर नमस्कार करके अक्षरब्रह्ममे पैर रखने की अनुमति मांग कर , प्रवेश करके सोहनी (बुहारी) करें और मंदिर वस्त्र करें तथा पात्रोको मिट्टीका लेप कर शुद्ध करें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१०२)

****

मार्जनादि करने के बाद प्रात:कालके मंगलभोग की सामग्री का समस्त प्रकार संजो कर सिंहासन, खण्डपाट, पिछवाई आदि व्यवस्थित कर के श्रीप्रभुको प्रार्थना - प्रेम पूर्वक जगानेका उपक्रम करें। तत्पश्चात् श्रीप्रभुका मुखारविंद शुक्ष्म वस्त्र से पोंछ कर श्रीहरिको शैयापर से सिंहासन पर पधरावें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१०३)

****

श्रीहरि को शैयासे जगा कर उपरना आदि वस्त्रालंकार सम्हाल कर, ऋतु अनुरूप आडबंध, बडा उपरना, आदिसे अलंकृत कर के, धारण किये हूए आभरणोंको तथा स्थान सम्हाल लें, फिर सिंहासन पर पंधरा कर बिराजमान करें। उसके बाद माखन मिश्री आदि पकवान सजा कर मंगलभोग समर्पित करें, तथा पानके बीड़े, सुमधुर जलकी झारी आदि समर्पित करें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१०४)

****

तत्पश्चात् मंगलभोग सरा कर, बीड़ा धरके, झारी भर कर, पधरा कर, मंगल गीत वाद्योके साथ - कीर्तन, वाद्य, और झालर के साथ मंगलार्ति संपन्न करें। तदनंतर् अभ्यंग, चमेली गंधयुक्त फुलेल आदिसे गृहस्नान विधानसे, ऋतु प्रकृति अनुसार स्नान करावें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१०५)

****

श्रीप्रभुको आमलकादिसे अभ्यंग पर्यंत गृहस्नानवत् स्नान कराके श्रीयमुनाजी का स्तवन करतें हुए, तीर्थस्नानवत् स्नान कराना चाहिए, और अंतमे बालककी नजर उतारने के भाव से चार बार जलकी लोटी श्रीप्रभुके उपर फिरा कर भूमि पर ढोल देनी चाहिए। तदुपरांत कोमल वस्त्रसे श्रीअंग पोंछ कर वस्त्रोको सुगंधित कर के व्रजसिमंतिनीओके भावसे वस्त्र - श्रृंगारादि धराने चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१०६)

****

रम्य सुमनोहर मयुरपिच्छ से अलंकृत मुकुटादिकों से श्रृंगार करना चाहिए। मल्लिका मालती पारिजात आदिवासी मिश्र

मालाओका पुष्पाभरण धरना चाहिए। शुभ वितान - चंदरवा, प्रसरै - पिछवाई, सिंहासन, खंड, पाट, सीडी, गांधी तकीया, प्रतिसिर - चिक आदि ऋतु अनुसार धरना चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१०७)

****

झारी - कुंजा आदि जलपात्र, ट्रस्टि, ईत्यादि संयोजित यथा स्थान रखें, क्रीडा उपस्कर खेल के थालमें विभिन्न खिलोने बजावें, आमोद गेंद, चोगान, सतरंज, चोपड़ा आदि आमोदके उपकरण श्रृंगार नियमानुसार सजावें, दर्पण समीपमें रखें,पानके बीड़ा सुपारी तेजाना युक्त बंटामें बजावें। विविध व्यंजनोसे भोगकी तैयारी करें, जारी आदि पुरित करें। देश-काल ऋतु अनुसार सेवा करें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१०८)

****

इस प्रकार सब संयोजित करके राजभोग की तैयारी करनी चाहिए। उसके पूर्व ग्वालके दर्शन स्वकीय भक्तों को करावें। दर्शन में तौर्यत्रिक अर्थात् कीर्तन झांझ पखावज से करे या केवल तानपूरे से करें, वीणाका संयोजन करें, फिर घण्टानाद के साथ धूप और दीप के साथ आर्ति करें।,
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१०९)

****

धूप दीप करके चौकी लगाकर अनेक प्रकार के शुद्ध - अन्यकी दृष्टिसे दूषित न हों, सामिभुक्त न हों जाय ऐसे, चतुर्विध सखडी, अनसखडी, दूधघर, शाकघर की सामग्री - भोज्य वस्तुओका श्रीहरिके सन्मुख यथा संभव सुविधा अनुसार-सुवर्ण पात्र आदिमें - सजा कर भोग धरें, निवेदन करें।j
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (११०)

****

श्रीप्रभुके सन्मुख चतुर्विध भोग सामग्री समर्पित करके, सामग्री में तुलसी पत्र पधरा कर, तुलसी पत्र सहित शंखमें जल लेकर, गायत्री (अथवा गोपाल मंत्र) से अभिमंत्रित करके फिर शंखोदक समग्र सामग्री पर प्रोक्षित करें। इस प्रकार धूप दीप आदि शास्त्रोक्त विधानोको गोपांगना भाव संयुक्त प्रकारसे संपन्न करके तुलसीदल श्रीगोपाल मंत्र एवम् निवेदन मंत्र द्वारा श्रीचरणोमें समर्पित कर के प्रार्थना निवेदित करें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१११)

****

राजभोग निवेदित करके मंदिर के बाहर आंगन में गायोको गौग्रास पूजनपूर्वक डाले, गौग्रास में भगवत् प्रसाद और रसोई में भोग धरने के पात्र पूरे भरनेके बाद अवशिष्ट अन्न डाले। फिर बचे हुए जप आदि प्रकार सम्पन्न करें और मध्यान्ह

संध्या भी सम्पन्न करें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (११२)
****

राजभोग धरनेके बाद समय होने पर आचमन करावें, मुखवस्त्र कराकर श्रीप्रभुके प्रसादको वहां से सरा कर, पान बीड़ा समर्पित करें। पूर्वधृत माला को गादीसे उठाकर, चौकी-स्थान जल एवं मंदिर वस्त्रसे शुद्ध करें। तदनंतर् शुद्ध सुगंधित श्री यमुना जल मिश्रित जारी भर कर पधरावें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (११३)
****

झारी पधराकर, गादीके बगल तकीये लगाकर, सिंहासन खंड-पाट चौकी चौगान, चौपड़ आदि सभी राजविभूति के उपकरणों को सज्जित कर श्रीप्रभुकी सेवा करें। एवं गीत - कीर्तन गान पदगानसे झांझ पखावज आदिके साथ, श्रीप्रभुकी राजभोग आरती उतारें। फिर साष्टाग दंडवत प्रणाम करके मंदिर के कपाट प्रार्थनापूर्वक बंद करें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (११४)
****

नीराजन प्रणामादि करके श्रीप्रभुकी आज्ञा लेकर, तथा श्रीप्रभुको ह्रदयमें अनुभावित करके, श्रीपुरुषोत्तम के मंदिर के द्वारोंको बंद कर बाहर आवे, तथा भगवत्प्रसाद, माला-बीडा, बीड़ी तुलसी चंदन आदि वस्तुओको प्राप्त कर मस्तक पर लगाकर, सन्मानपूर्वक ग्रहण करके द्वार पर भी अक्षरब्रह्मरूप भगवद् धामको प्रणाम करना चाहिए और गृहके प्रति प्रयाण करना चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

”साधन दीपिका" (११५)
****

राजभोग के बाद अनौसर करके मध्यान्हिक, तर्पणादिक समाप्त करके श्रीमद भागवत का पाठ करें। फिर, श्रीमत् प्रसादको भक्तजनो में वितरित कर स्वसामर्थ्य अनुसार उन्हें भोजन करावें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (११६)
****

अनन्तर समागत अतिथि-ब्राह्मणो को, दीनजनोको यथायोग्य प्रकारसे भोजन करावें। तत्पश्चात् स्वयं अपने स्वकिय परिवारजनो के साथ भोजन ग्रहण करें। उसके साथ पूर्वोक्त प्रकारसे विश्वदेव भी सम्पन्न करें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (११७)

****

भोजनान्तर विश्राम के क्षणोमें स्वकिय / परिवार जनों के साथ वार्तालाप करना चाहिए। लौकिक / व्यवहारिक बातें करनी चाहिए, परंतु ये बातोमें क्रोध, मोह, मद, मात्सर्य से दूर रहना चाहिए। राजवेश यात्रा आदि कार्योमे ही धारण करें, गृहकृत्य, सेवा आदि में इसका उपयोग न करें। वहां वैष्णव वेश ही उचित है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (११८)

****

यदि व्यक्ति साधन संपन्न हो तो भक्तजनो (आचार्यो) के द्वारा लिखे गये शास्त्र ग्रंथो का परिशिलन करना चाहिए। दुर्जन, वैरी, दुष्टजनोकी जीवनी या उक्तियोसे दूर रहना चाहिए। और यदि सर्वथा वृत्ति (आमदनी) का अभाव हो श्रीहरिकी सेवा एक याम मात्र करके, अतिरिक्त समय अनिषिद्ध प्रकारोसे अपनी आजिविका उपार्जन हेतु देना चाहिए।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (११९)

****

जिसकी तृष्णा कभी तृप्त नहीं होती, जो असंतुष्ट रहता है, उसे 'दरिद्री' कहतें है। एवं जो 'कुटुम्वार्त' हो, अर्थात् परिवार के लोगों के द्वारा सेवामें, भक्तिमे बाधित हो, ऐसी पारिवारिक समस्याके कारण अनुकुलता नहीं होती हो, उसे 'स्वरूप सेवा' के स्थान पर 'नामसेवा' का क्रम लेना चाहिए। वह विद्वान हो तो भागवत पठन का क्रम ले सकता है, अन्यथा अशक्तिमे वह सेवा सहायक - परिचारकी भी कर सकता है।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१२०)

****

अपरान्हमें सायं संध्या करें, फिर शुद्ध होकर तिलकादि धारण करके, ताम्बुलसे मुख शोधन करके, आचमन, मुगकी गंध स्वच्छ करके मंदिर में जाकर उत्थापन करावे।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१२१)

****

भोग वनलीलानुरूप पुलिन्दिनी व्रजभक्तोके भावसे - कंदमूल, फल, गव्य, आदिसे सजाकर समर्पित करें। फिर सुंदर मालादि धारण करावे, झारी भरकर पधरा कर वीणा, पखावज, पदकीर्तन गान द्वारा प्रभुको प्रसन्न करें।
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१२२)

****

महानुभाव भगवदीयोंके द्वारा रचित पदोंका गान करें, जिनमें हृदय को आन्नदोत्साह प्रदान करनेवाली भगवल्लीलाओंके रहस्य छिपे हुए हैं। अनन्तर श्रीगोवर्धननाथ गौचारण कराके पून:व्रजमंडलमें पधार रहे हैं, इस भावना को हृदयमें अनुभावित करते हुए व्रजसीमन्तिनीओ - यशोदाजीकी भावना करके सन्ध्या आर्ती - नीराजना करें।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१२३)

****

सायंकाल भी शयनभोग - नैवेद्य यथा-साधन एवं सम्पन्नता निवेदित करें। भोग सरा कर शयनार्ति - नीराजन करें। फिर शयन पर्यंत की सेवा ऋतुकाल प्रकृति नियमानुसार विचार कर करें। तथा पोढाने के समय भी यथायोग्य - यथाधिकार भगवल्लीलाका अनुसंधान करते हुए शयन करावें।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१२४)

****

शयन पर्यंत की भगवत् सेवा करके सायं संध्या का विशेष जप और 'देव यज्ञात्मक होम- आहुति करें, भगवत् प्रसाद देवार्पण, जनार्पण करके स्वयं ग्रहण करके भगवान की कथाओको स्वकीय भक्तजनोको कहे, और स्वयं श्रवण करें। फिर विश्राम करें।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१२५)

****

इस प्रकार स्वरूपसेवा एवम् नामसेवा करते हुए, शुद्ध पवित्र अवस्थामें भगवत्चरणार्विंदो का ध्यान करते हुए, विश्राम हेतु शयन करें। क्वचित् स्वपत्नी सुतार्थिनी हो तो गमन करें, क्योंकि यह भी ईन्द्रियों पर विजय प्राप्त करनेके लिए एक साधन है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१२६)

****

पूर्वोक्त प्रकारसे भक्तिमार्गीय जीवन शैली से इस भूतलपे जिस भक्तके दिन गुजरते हैं, अर्थात् भगवत्सेवा और भगवत्कथामें जीवन यापन होता है, वह निश्चय ही कृतकृत्य हो जाता है। ऐसे भक्तके देहावसान के बाद श्रीहरि उस जीवात्मा का आश्लेष करतें है।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

“साधन दीपिका" (१२७)

****

भक्तिशास्त्रो में जिस प्रकार भक्तजनोके आचार कहे गये है, उसी प्रकार यहां निरुपित किया है। इस प्रकार जीवन में आचरणके अलावा भगवत्प्राप्तिका कोई दूसरा उपाय दृष्टिगोचर नहीं होता है।

नोंध - यहां यह “साधन दीपिका" ग्रथ समाप्त होता है। यहां पिछ्ले चार महीने से तृतीय गृहाधिपति पू.पा. गो.१०८ श्री व्रजेशकुमारजी महाराजश्री की टिका 'रश्मि भावना' के आधार पर प्रस्तुति की गई थी।

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)